By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-1

Topic – Political thoughts of Aurobindo

Class – B.A. degree-I (Hons) Paper-II
Unit-7

Subject – Political science

Date – 10 Nov.2020

By Rahul Kumar Jha.

अरबिनो घोष के राजनीतिक विचार :–
(Political thoughts of Aurobindo Ghosh)

अरबिन्द घोष अपने जीवन के प्रथम चरण में वे एक क्रांतिकारी थे जिसमें उन्होंने कांग्रेस अर्थात उदारवादियों को कमजोर कहा। उनके अनुसार वे याचिकाओं तथा प्रार्थना-पत्रों के बलबूते बलबूते देश को आजादी का सपना सजा रहे थे। इस चरण में उन्होंने उदारवादियों तथा कांग्रेस की भरपूर आलोचना की और इस विषय में उन्होंने New Lamp for olds जैसे लेख प्रकाशित किये। उनके जीवन का दूसरा चरण का प्रारंभ तब हुआ जब उन्हें और उनके भाई वीरेन्द्र को मानिकटोला बम हत्याकांड

में फँसाकर तथा राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और उनके बड़े भाई को फाँसी की सजा दे दी गई। उसी समय जेल में रहकर उन्होंने आत्म-अध्ययन किया तथा अपने जीवन में अध्यात्म को अपनाया। पुडुचेरी में रहते हुए उन्होंने औरोविल नामक आश्रम की स्थापना की।

उनके द्वारा प्रतिपादित प्रमुख राजनीतिक विचार हैं —

निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive ~~regi~~ resistance) :—

अरविन्द घोष ने निष्क्रिय प्रतिरोध का विचार आयरलैंड के निष्क्रिय प्रतिरोध से लिया। उनका निष्क्रिय प्रतिरोध गाँधी जी के निष्क्रिय प्रतिरोध से बिल्कुल भिन्न है। उनके अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध अहिंसात्मक होना चाहिए लेकिन अगर सरकार निर्दयी हो जाये तो हिंसा का प्रयोग करने से भी नहीं चूकना चाहिए क्योंकि अत्याचारों को सहना कायरता है, लेकिन उनका मानना था कि हिंसा प्रयोग का अंतिम मार्ग है

और हिंसा का रूप ऐसा न हो जिससे किसी को हानि न हो बल्कि आत्मरक्षा के रूप में ही इसका प्रयोग किया जाना चाहिए उनके अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध निम्नलिखित आधार पर होना चाहिए –

i) स्वदेशी का प्रचार व विदेशी का बहिष्कार

ii) सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार

iii) सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार

iv) ब्रिटिश सरकार द्वारा गठित सभी संस्थानों का बहिष्कार

v) जनता द्वारा सरकार का बहिष्कार।

निष्कर्षत! अरविन्द घोष के निष्क्रिय प्रतिरोध रूपी अस्त्र की महत्ता और प्रासंगिकता को इस रूप देखा जा सकता है कि गांधी का सत्याग्रह सिद्धांत जो देश को आजादी दिलाई, उसका स्रोत यही सिद्धांत था।